कश्मीर समस्या और उसका समाधान

श्रीमती अंजू चौधारी
वरि०शोध सहा०
तृतीय -पुरस्कार

कश्मीर भारत का एक अनुपम एवं सुन्दर प्रदेश है। हरी भरी वादियाँ सुन्दर झील से सजा यह प्रदेश अपनी सुन्दरता के लिए पूरी दुनिया में विख्यात है। इसकी सुन्दरता को देखकर ही एक कवि ने कहा था कि " यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं हैं, यहीं है यहीं है" परन्तु विगत १२ वर्षो से कश्मीर विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। इस निबन्ध में कश्मीर की समस्या और उसके समाधान पर प्रकाश डाला है।

कश्मीर समस्या -

वैसे तो कश्मीर में कई प्रकार की समस्याओं ने जन्म ले लिया है जैसे आतंकवाद की समस्या, प्राचीन धरोहर के रखरखाव की समस्या, औद्योगिक विकास की समस्या आदि। इनमें आतंकवाद की समस्या प्रमुख है जो विभिन्न समस्याओं की जननी है। आंतकवाद की समस्या का आरंभ पाकिस्तान द्वारा भारत के हिस्से वाले कश्मीर पर अपना अधिकार जमाने के लिए खेली गई कुटिल चालों से शुरू हुआ पाकिस्तान ने सन १९८९ में कुछ अफगानिस्तानी बागियों के साथ मिलकर जेहाद के नाम पर कश्मीर की जनता को भड़काया, जिसके फलस्वरूप वहाँ हिन्दु और मुसलमानो में नफरत फैल गयी और अन्त में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को अपना घरबार छोड़कर कैम्पों की शरण लेनी पड़ी। फिर भी जब पाकिस्तान पूरे प्रदेश पर अपना कब्जा नहीं जमा सका तो उसने १९९९ में कारगिल में नियंत्रण रेखा को पार करने की नाकामयाब कोशिश की, जिसको असफल करने के लिए कितने ही जवान मौत की नींद सो गये। आज तक वहाँ युद्ध जारी है लेकिन जवानों के साथ - साथ भोली भाली जनता को मौत के घाट उतारा जा रहा है। इसके कुछ उदाहरण मई २००० में लगभग २५ अमरनाथ तीर्थ यात्रियों का कत्ल आदि।

इन सब हालात को देखते हुए कश्मीर को भी भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है पर्यटन विभाग को इससे काफी हानि हुई है जिससे प्राचीन धरोहर की सुन्दरता को बनाये रखना कठिन हो गया है। अगर कश्मीर इसी तरह से समस्याओं से घिरा रहा तो एक दिन अपनी पहचान खो बैठेगा इसलिए आतंकवाद की समस्या का समाधान शीघ्र होना अनिवार्य है।

समस्या का समाधान -

आतंकवाद की समस्यां से निपटने के लिए भारत सरकार को कुछ बातों का ध्यान रखना होगा जो निम्नलिखित है -

१. इस समस्या से निपटने के लिए सरकार को अपनी विदेश नीति पाकिस्तान को कड़े एवं स्पष्ट शब्दों में बतानी चाहिए।
२. पकड़े गये आतंकवादियों को कारागार में न डालकर उनके ऊपर लगे आरोपों की न्यायिक जाँच पक्षपात रहित तरीके से कराकर उन्हें अपने देश के कानून के तहत सजा देनी चाहिए।

३. सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे कश्मीर की जनता भारत सरकार पर विश्वास कर सकें और आतंकवादियों का डर मन से निकाल सके । क्योकि किसी भी समस्या से निपटने के लिए जन जागृति सबसे बड़ा व कारगर हथियार है ।

४. सरकार को शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन करना पड़ेगा जिसके प्रकाश में कश्मीर के नौजवान भले बुरे की पहचान कर सके और दूसरों के बहकावे में आकर गलत राह पर भटकना छोड़ दे ।

५. सरकार को अपनी सुरक्षा व्यवस्था को भी सुदृढ करना पड़ेगा जिससे सीमा पार से आतंकवादियों की घुसपैठ को रोका जा सके ।

६. अपनी वैज्ञानिक शक्ति को भी मजबूत करना पड़ेगा जिससे शीघ्र घुसपैठ का पता लगाया जो सके, जिससे कारगिल युद्ध जैसी घटना को टाला जा सके ।

उपसंहार -

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए कश्मीर समस्या का समाधान तभी संभव है जब सरकार व कश्मीर की जनता दोनो ही अपने आन्तरिक भेदभाव को भुला कर प्रदेश की जनता की भलाई के लिए ठोस कदम उठायेगी । किसी भी समस्या का समाधान तभी संभव है जब उससे पीड़ित जनता उसको उत्पन्न करने वाले कारणो को समूल ही उखाड़ फैंके और यह तभी संभव है जब जनता जागरूक होकर अपने भले बुरे की पहचान कर सकेगी ।

" बांट बांट कर धरा को मानव हो रहा प्रसन्न
बंट-बंट कर हिस्सों में मानवता का हो रहा अन्त
अब तो हे मानव अपने कर्तव्य को पहचान
यही है हर समस्या का समाधान"

***